रूहानी ज्ञान का जादू

● ब्रह्माकुमार शंकर, दादावाड़ी, कोटा

मैं पिछले 25 सालों से कोटा में कपड़े की दुकान पर काम करता हूँ। ईश्वरीय ज्ञान में आने से पहले मैं शराब का काफी सेवन करता था। रविवार को दुकान की छुट्टी होती तो सुबह की शुरूआत शराब से होती, शराब के बिना मुझे नींद नहीं आती थी। मेरे माता-पिता ने मुझे सुधारने का काफी प्रयास किया। जगह-जगह पूछने जाते रहे, कहीं से कुछ फर्क नहीं पड़ा।

भगवान से मांगी मौत

मेरी बहन को ईश्वरीय ज्ञान में चलते पाँच-छह साल हुए। एक दिन उसने ब्रह्माकुमारी बहनों को घर आने का निमंत्रण दे दिया। उस दिन भी मैंने सुबह से ही शराब का सेवन कर रखा था। घर आये सफेद वस्त्रधारियों को देख मैं दंग रह गया। ब्रह्माकुमारी दीदी ने मुझे काफी समझाया, उन्होंने मुझे सेन्टर पर चलने को कहा। मैंने उनसे कहा, मैं शाम को आता हूँ पर शाम को सेन्टर न जाकर मैं शराब पीने लगा। उस दिन मुझे कुछ अलग प्रकार का अनुभव होने लगा। ऐसा लग रहा था कि कोई मेरा पीछा कर रहा है। उसी रात शराब का सेवन अधिक करने के कारण मुझे नींद नहीं आई। करवट बदल-बदलकर सुबह के ठीक चार बजे मैं बाथरूम के लिए उठा। नीचे फर्श पर सांप, चूहे, बिल्ली, नेवला आदि दिखाई देने लगे। फिर एक आवाज सुनाई दी, उतर नीचे, बहुत ज्यादा शराब पीनी आ गई, मैं पिलाता हूँ जी भर। आठ दिन के अंदर तुझे क्या-क्या दिखाता हूँ देख, अभी तो कुछ भी नहीं दिखाया। टीवी के स्पीकर से यह आवाज आ रही थी। ऐसी चीज़ें देखने के बजाय मैं भगवान से मौत माँग रहा था। उसी दिन मैं सेन्टर पर गया और बाबा के ट्रांसलाइट के सामने शराब, मांस, जर्दा, गुटखा – ये सब चीज़ें छोड़ने की कसम खा ली। फिर भी मैंने एक गलती की। सब छोड़ने की कसम खाने पर भी जर्दा, गुटखा छिपकर खाता था।

शराबी के बजाय समझाने वाला

बुधवार के दिन गुटखा, जर्दा दोनों मिलाकर, खाकर सेन्टर पर गया। वहाँ सफाई का कार्य चल रहा था। झाड़ू-पोंछा के बाद बाबा की ट्रांसलाइट पोंछनी थी। ट्रांसलाइट पोंछते ही मेरे शरीर में सूई जैसी चुभन हुई। पहले तो मैं समझ नहीं पाया, बाद में सोचा, शायद जर्दा, गुटखा खाने की वजह से है। उसी दिन शाम को दुबारा सेन्टर पर आया। सेन्टर के बाहर जर्दा, चूना, गुटखा तीनों फेंक दिये। वो दिन और आज का दिन कभी हाथ नहीं लगाया। ये सब छूटने के बाद जीवन में बहुत फर्क आ गया है। अब तक जो लोग मुझे अपने पास खड़ा नहीं होने देते थे, वे ही आज बहुत मिन्नतें करते हैं कि बैठो ना, चले जाना। पहले मुझसे शराब की बू आती थी, लोग सोचते थे कि जावे। अब रूहानी खुशबू महकने लगती है। बाबा ने मुझे न्यारा भी बना दिया, प्यारा भी बना दिया। मैं बाबा का अहसान नहीं भुला सकता। अगर कोई शराबी दोस्त, शराब के लिए दस रुपये माँगता है तो मैं कहता हूँ, शराब के लिए मेरे पास पैसे नहीं हैं, तू कचौरी खा ले, भले ही पैसे वापस नहीं देना। वे लोग सोचते हैं कि पहले यह शराब के लिए पैसे माँगता था, आज हमको समझाता है। ऐसा कौन-सा जादू हो गया है इसको। बाबा के रूहानी ज्ञान का जादू चल गया है। ❖